रघुवीर सहाय

पानी

पानी का स्वरूप ही शीतल है

बाग में नल से फूटती उजली विपुल धार
कल-कल करता हुआ दूर-दूर तक जल
हरी में सीझता है
मिट्टी में रसता है
देखे से ताप हरता है मन का, दुख बिनसता है ।

पानी के संस्मरण

कौंध । दूर घोर वन में मूसलाधार वृष्टि
दुपहरः घना तालः ऊपर झुकी आम की डाल
बयारः खिड़की पर खड़े, आ गयी फुहार
रातः उजली रेती के पार, सहसा दिखी

Raghuveer Sahay (1929-1990), born in Lucknow, was a journalist and editor; but most importantly he was a poet, with a long list of poetry collections to his name. Our poems are from Kritya.in.